*मेघनाद देसाई एकेडमी ऑफ इकॉनोमिक्स में दीक्षांत समारोह के अवसर पर उद्घाटन भाषण**

डॉ. उर्जित आर. पटेल

1. वर्ष 2018 की क्लास, उनके माता-पिता, मेहमान और विद्यार्थी, लॉर्ड मेघनाद देसाई, मेघनाद देसाई एकेडमी ऑफ इकॉनोमिक्स के चेयरमैन और एकेडमी के सभी अकादमिक बंधुओं, मुझे इस दीक्षांत समारोह में आमंत्रित करके आपने मुझे अत्यंत सम्मानित किया है। इसने मुझे तीन दशक पहले के अपने स्नातक समारोह की याद दिला दी।

2. हालांकि लॉर्ड मेघनाद देसाई का विशाल और महान कार्य सर्वज्ञात है, किंतु फिर भी मैं मेघनाद देसाई, जो इस अकादमी के चेयरमैन, लंदन स्कूल ऑफ इकॉनोमिक्स के अवकाशप्राप्त प्रोफेसर, और एक प्रख्यात वैश्विक हस्ती हैं, के बारे में चंद शब्द कहना चाहता हूं। अर्थशास्त्र और शिक्षा के क्षेत्र में उनका योगदान, और विशेषत: लंदन स्कूल ऑफ इकॉनोमिक्स में अध्यापन के प्रति उनकी प्रतिबद्धता आख्यान का विषय है। वे एक प्रबुद्ध संस्था-निर्माता हैं, जिसका एक शानदार उदाहरण है सेंटर फॉर दि स्टडी ऑफ ग्लोबल गवर्नेंस, जिसकी स्थापना उन्होंने 1992 में की थी। लॉर्ड देसाई ने वृहत् साहित्य रचा है, जिसमें अंतरराष्ट्रीय राजनैतिक अर्थव्यवस्था, मार्क्सवादी अर्थशास्त्र, मौद्रिक अर्थशास्त्र और वैश्वीकरण पर लेखन शामिल है (एक परोक्ष टिप्पणी यह है कि अस्सी के दशक में यूनाइटेड किंगडम में मैक्रो कोर्स के लिए लॉर्ड देसाई की किताब 'टेस्टिंग मॉनेटरिज़्म' पढ़ना आवश्यक था)। उन्होंने भारतीय राजतंत्र से संबंधित मुद्दों पर भी काफी काम किया है, तथा यूके के राजनैतिक जीवन में उनका विचक्षण प्रभाव रहा है। वृहत समाज के प्रति उनके इस योगदान का सम्मान करते हुए उन्हें युनाइटेड किंगडम द्वारा 1991 में सेंट क्लीमेंट डेन्स के लॉर्डशिप की उपाधि दी गई, तथा भारत सरकार द्वारा उन्हें 2008 में पद्मभूषण से सम्मानित किया गया। मैं जहां से आता हूं, वहां लॉर्ड देसाई ने 2004 में पहला ब्रह्मानंद मेमोरियल लेक्चर दिया। भारतीय रिज़र्व बैंक ने मूर्धन्य शिक्षक और विद्वान प्रो. पी.आर.ब्रह्मानंद की स्मृति में यह व्याख्यान शृंखला प्रारंभ की। इस शृंखला का प्रथम व्याख्यान उनके सर्वाधिक प्रसिद्ध विद्यार्थी द्वारा दिया जाना सर्वथा उपयुक्त था।

3. मैं समझता हूं कि मेघनाद देसाई एकेडमी की स्थापना एक उत्कृष्टता की संस्था के रूप में हुई है। यह स्नातक विद्यार्थियों को अकादमिक दृढ़ता और तकनीकी कुशलता उपलब्ध कराती है, ताकि वे एक चुनौतीपूर्ण व्यवसाय की आवश्यकताओं की पूर्ति कर सकें, जो हर गुजरते हुए दिन के साथ अकादमिक लोगों, नीति निर्माताओं और बाजार के पेशेवरों, उद्योग, नीति और सरकार के लिए अधिक दक्षतापूर्ण होता जा रहा है। यह यथोचित है कि इस अकादमी की शुरुआत भारत के कुछ श्रेष्ठ अर्थशास्त्रियों द्वारा की गई है, जिसने छात्रों के लिए संपन्न और वैविध्यपूर्ण परिदृश्य का निर्माण किया है।

नीति निर्माण में अर्थशास्त्रियों/ अनुसंधानकर्ताओं की भूमिका

4. इस अवसर पर मैं अर्थशास्त्रियों के बारे में भी कुछ शब्द कहना चाहता हूं। कॉर्पोरेट क्षेत्र, केंद्रीय बैंकों, सरकारों और बहुपक्षीय संस्थाओं में रणनीतिक नीतियों का स्वरूप निर्धारित करते समय जनता के दृष्टिकोणों और प्रकटीकरणों को आकार देने में उनकी भूमिका अक्सर उपेक्षित रह जाती है। सुविज्ञ नीतिगत विकल्पों और परिणामी निर्णयों को बनाने में गहन अनुसंधान और प्रशिक्षण सहायक होते हैं। सरकारी नीति के क्षेत्र में अर्थशास्त्री जो प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष प्रभाव डाल सकते हैं, उसमें हमें विभेद करना होगा। जब हम इस पर विचार करते हैं कि किसी नीति के निर्माण, उदा. खजाने पर से आर्थिक सहायता (सब्सिडी) के बोझ को कम करने में, विशेषज्ञ किस प्रकार प्रभाव डाल सकते हैं, तब हम उनके बारे में सोचते हैं। तथापि, नीति निर्माण में उनका सर्वोत्तम योगदान कम प्रत्यक्ष मार्गों से हो सकता है, जैसे उनके अनुसंधान द्वारा, जो नीति निर्माताओं को आर्थिक समस्याओं/ चुनौतियों के बारे में अलग तरीकों से सोचने पर विवश करते हैं।

* श्री उर्जित आर. पटेल, गवर्नर, भारतीय रिज़र्व बैंक द्वारा 3 अगस्त 2018 को मुंबई में मेघनाद देसाई एकेडमी ऑफ इकॉनोमिक्स में दीक्षांत समारोह के अवसर पर व्याख्यान।

5. अर्थशास्त्रियों द्वारा समाज के लिए योगदान देने हेतु उपयुक्त माहौल बनाने में नीति निर्माता भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। इस संदर्भ में, हाल के वर्षों में तीन दूरगामी महत्व के सुधार लागू करने के लिए भारत सरकार की प्रशंसा की जानी चाहिए। भारत सरकार ने ऐसे सुधार, जिनका वर्णन केवल कायाकल्प करने वाले सुधारों के रूप में किया जा सकता है, को लागू करने के लिए जिस असामान्य साहस से काम लिया है, उसे किसी भी तरह कम करके नहीं आंका जा सकता है। इससे आने वाले वर्षों और दशकों में हमारे आर्थिक विकास की बेहतरी को आकार दिया जा सकेगा।

6. वर्ष 2016 में सरकार ने आरबीआई अधिनियम में संशोधन का विधान किया ताकि भारतीय रिज़र्व बैंक को देश की मौद्रिक नीति फ्रेमवर्क का परिचालन करने का विनिर्दिष्ट अधिदेश दिया जा सके, जिसका प्रमुख उद्देश्य "संवृद्धि का उद्देश्य ध्यान में रखते हुए कीमत स्थिरता बनाए रखना है।" मुद्रास्फीति को लक्ष्य करने वाली लचीली संरचना में औपचारिक रूप से परिवर्तन करने तथा गवर्नर के द्वारा मौद्रिक नीतिगत निर्णय का त्याग करके छ: सदस्यों वाली मौद्रिक नीति समिति (एमपीसी) को सौंपने के साथ ही यह मौद्रिक नीति के संचालन की संस्थागत संरचना में मूलभूत परिवर्तन था। अन्य महत्वपूर्ण सुधार वस्तु एवं सेवा कर परिषद की स्थापना था, जिसके द्वारा भारत सरकार ने सहकारी संघवाद के लिए अत्यंत प्रभावी संस्थागत प्रणाली का निर्माण किया है। राज्य सरकारों के साथ मिल कर सरकार ने अंतरराष्ट्रीय फेडरल संवाद के विभाजक कार्य के लिए एक नए प्रति-विवरणात्मक का प्रस्ताव किया है, जिसमें एक बड़े सामूहिक कार्य के लिए स्वेच्छा से त्याग और राजकीय प्रभुत्व का समुच्चय किया जाएगा। इसके अतिरिक्त, दिवाला और शोधन- अक्षमता संहिता, 2016 (आईबीसी) को लागू करना देश की ऋण संस्कृति सुधारने की ओर महत्वपूर्ण कदम है। आईबीसी में आस्तियों के समाधान के लिए एक ही स्थान पर समयबद्ध प्रक्रिया उपलब्ध कराई गई है, जिसमें स्पष्ट रूप से उद्यमिता को बढ़ावा देने, आस्तियों के मूल्य को अधिकतम करने तथा सभी हितधारकों के हितों का संतुलन बनाने पर बल दिया गया है। हमारे देश के इतिहास में ये कदम अपूर्व हैं, और यह सुदृढ़ लोक नीतियां बनाने की सरकार की प्रतिबद्धता दर्शाती हैं, जिसमें संस्थाओं की स्थापना करके उन्हें ऐसे कार्य निष्पादित करने के लिए शक्तियां प्रदान की जा रही हैं, जो समष्टि आर्थिक और वित्तीय स्थिरता की सुरक्षा करने और उसे अधिक सुदृढ़ बनाने के लिए महत्वपूर्ण हैं।

7. अर्थशास्त्रियों को अकसर गलत समझा जाता है, और कभी कभी तो उनकी निंदा भी की जाती है। उदाहरण के तौर पर अर्थशास्त्रियों की ढ़ेरों आलोचना की गई कि वे 2007-08 के वैश्विक संकट को देखने और उसका पूर्वानुमान लगाने में असफल रहे, और इससे उनके व्यवसाय की साख पर भी आँच आई। मेरी दृष्टि से यह बहुत ही अनुचित है। डॉक्टर बीमारी को समझता है, लेकिन कौन कब बीमार पड़ेगा, इसका पूर्वानुमान नहीं लगा सकता। अर्थशास्त्रियों का मौलिक उद्देश्य संकटों का पूर्वानुमान लगाना नहीं है, बल्कि यह समझाना है कि सामान्य कारोबारी जीवन में इंसान कैसे व्यवहार करता है, और ऐसा करते समय वे संकट निर्माण होने की चेतावनी देते हैं, उससे पहले की रणनीति सुझाते हैं और ऐसे संकट, जो समष्टि आर्थिक निगरानी में से छूट जाते हैं, से निपटने के लिए उनका असर कम करने वाली नीतियां बनाते हैं। ज्यादातर, उन्हें प्रतिरोध का सामना करना पड़ता है। हायमैन मिन्स्की 1950 के दशक में अपने अकादमिक कैरियर की शुरुआत से 1996 में अपनी मृत्यु के समय तक अपेक्षाकृत अचर्चित रहे।[1] वित्तीय संकट और उसके कारणों पर उनके अनुसंधान ने उस समय मुख्य प्रवाह के लोगों का अधिक ध्यान आकर्षित नहीं किया था। केवल वर्ष 2007 में जब सब-प्राइम मॉर्टगेज क्राइसिस उभर कर सामने आया, तब जाकर हर व्यक्ति उनके लिखे की बात करने लगा, जब वैश्विक वित्तीय बाजारों में उथल-पुथल मचने पर उसका मतलब समझने की कोशिश की गई। किसी लोकतंत्र या शांति की स्थिति में अचानक वित्तीय संकट के उभरने को अब अकसर 'मिंस्की' मोमेंट कहा जाता है। एक अन्य चौंका देने वाले उदाहरण में जॉर्ज अकेरलोफ का महत्वपूर्ण पर्चा 'द मार्केट फॉर लेमन्स'[2] का प्रकाशन होने से पहले अनेक जर्नल उसे अस्वीकार कर चुके थे। जैसे जैसे समय बीतता गया, उनके पर्चे ने यह सुबुद्धि दी कि बाजार के असफल होने का मूल कारण गलत चुनाव है, और इस विचार ने सूचना अर्थशास्त्र की नींव रखी।

---

[1] Hyman Minsky [1986], "Stabilising an Unstable Economy", McGraw-Hill Professional, New York.

[2] George Akerlof [1970], "The Market for Lemons: Quality Uncertainty and the Market Mechanism", Quarterly Journal of Economics, Vol. 84, pp. 488-500.

8. नए और ताजगी भरे विचारों को अकसर प्रतिरोध का सामना करना पड़ता है, क्योंकि वे चिंतन की वर्तमान सीमाओं को चुनौती देते हैं। इसलिए, जब आप अपनी अंतरात्मा की आवाज पर इस दुनिया में कदम रखते हैं, तो अपने दिमाग को खुला रखें, लीक से हट कर सोचें, निर्भय और प्रयोगशील बनें। मुझे पूरा विश्वास है कि आप जैसे युवा अलग तरह से सोच सकते हैं, नए चिंतन रच सकते हैं और आप सैद्धान्तिक रूप से जो सोचते हैं, उनकी अनुभवजन्य छानबीन आप और अधिक रचनात्मकता से कर सकते हैं। आपकी इस 'सहस्त्राब्दी वाली' पीढ़ी को स्वीकृत मेधा को चुनौती देने का प्रयास करना चाहिए ताकि हम समाज में अधिक 'रचनात्मक विनाश' ला सकें और एक नया तेजस्वी विश्व निर्माण करें।

9. केंद्रीय बैंकर के रूप में जहां हम परिचालन करते हैं, मेरे व्यवसाय के उस सदा-परिवर्तनीय विश्व में नयी और ताजा सोच की मांग रहती है। एक उदाहरण देना चाहूंगा। हम अपने सर्वेक्षणों और विश्लेषणों के द्वारा हाउसहोल्ड तथा फर्मों के व्यवहार को समझने का प्रयास कर रहे हैं। तथापि, अब हमारे लिए ई-कॉमर्स, डिजिटल लेनदेन तथा बिग क्रॉस सेक्शनल डेटा जैसे नए आयामों में मैक्रो-स्तर के कीमत निर्धारण गतिकी को समझना जरूरी हो गया है। यह बैंकिंग, गैर-बैंकिंग वित्तीय मध्यस्थता, भुगतान, मुद्रा प्रबंध और वित्तीय समावेशन जैसे डोमेनों पर भी लागू होता है। इस प्रकार के अनुसंधान के अभाव में कभी कभी नीतिगत विकल्प इष्टतम से कमतर परिणाम दे सकते हैं। भारत में आय और रोजगार निर्माण में असंगठित क्षेत्र की महत्वपूर्ण भूमिका होने के बावजूद इसके संबंध में सूचना की बेहद कमी है। फिर भी, सरकारी या गैर-सरकारी आंकड़ों का यह अभाव अर्थशास्त्रियों को इसकी गतिकी को समझने के लिए सर्वेक्षण-आधारित अध्ययन करने से नहीं रोक पाया है।

10. अंत में, मैं पॉल रोमर, जो अंतर्जात संवृद्धि सिद्धान्त के एक प्रवर्तक हैं, के प्रसिद्ध पर्चे 'दि ट्रबल विथ मैक्रोइकॉनॉमिक्स से उद्धृत करना चाहता हूं', विज्ञान जब ठीक से काम करता है, तब भी वह परिपूर्ण नहीं है..... विज्ञानी सत्य के प्रति प्रतिबद्ध हैं, बावजूद इसके कि वे जानते हैं कि पूर्ण सत्य कभी भी प्रकट नहीं किया जा सकता है। वे केवल एक मतैक्य की आशा कर सकते हैं, जो उसी स्थूल अर्थ में सत्य की स्थापना करता है, जैसे स्टॉक बाजार किसी फर्म का मूल्य स्थापित करता है। यह गलत हो सकता है, शायद काफी लंबे समय तक। किंतु अंत में **विद्रोहियों** (मैं इस पर बल देता हूं), जो सर्वसम्मति और सर्वसम्मति के समर्थकों को चुनौती देने के लिए स्वतंत्र हैं, के द्वारा इसे सही ठहराया जाएगा। क्योंकि वे अब भी सोचते हैं कि सही तथ्य सामने लाना महत्वपूर्ण है।

11. युवा अर्थशास्त्रियों के रूप में उत्तीर्ण होकर बाहर निकलते समय आप याद रखें कि आपके पास इस देश के भविष्य को आकार देने की और लाखों लोगों के जीवन को प्रभावित करने की ताकत है। आप हमारे कल के प्रकाशमान समाज के प्रवेश द्वार पर खड़े हैं; कल्पनाएं करने और उन कल्पनाओं को सबके लिए बेहतर वास्तविकता में बदलने की काबिलियत से लैस होकर। मैं इस अकादमी के सभी नये स्नातकों को बधाई देता हूं और आप सभी को उज्ज्वल भविष्य के लिए शुभकामनाएं देता हूं।

[3] Paul Romer [2016], "The Trouble with Macroeconomics", The Commons Memorial Lecture of the Omicron Delta Epsilon Society, January 5, 2016.